महाकवि कालिदासविरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम्

प्रथम अंक

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री

ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् |

यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ||

संदर्भ – प्रस्तुत श्लोक महाकवि कालिदस द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुंतलम् नामक नाटक से प्रथम सर्ग से लिया गया है।

अन्वय- या स्रष्टुः आद्या सृष्टिः या विधिहुतं हविः वहति या होत्री ये द्वे कालं विधत्तः या श्रुतिविषयगुणा विश्वम् स्थिता व्याप्य याम् सर्वबीजप्रकृतिः इति आहुः यया प्राणिनः प्राणवन्तः ताभिः प्रत्यक्षाभिः अष्टाभिः तनुभिः प्रपन्नः ईशः वः अवतु |

भावार्थ – जो (देह) विधाता की प्रथम कृति है, जो (देह) विधिपूर्वक हवन किए गए पदार्थ वहन करती है, जो (देह) हवन करनेवाली है, जो दो (देहें) समय का विधान करती हैं, जो (देह) श्रुतिगोचर गुणवाली होती हुई विश्व को व्याप्त कर विद्यमान है, जिस (देह) को समस्त बीजों का मूल कारण मानते हैं और जिससे जीव जीवधारी हैं, उन प्रत्यक्ष आठ देहों से युक्त शिव आपकी रक्षा करें।

व्याकरण – या = यत् शब्द का प्रथमा, एकवचन; स्रष्टुः = स्रष्टा शब्द का षष्ठी, एकवचन; आद्या = आद्या शब्द का प्रथमा, एकवचन; सृष्टिः = सृष्टि शब्द का प्रथमा, एकवचन; या = यत् शब्द का प्रथमा, एकवचन; विधिहुतं = विधिहुत शब्द का

द्वितीया, एकवचन; हविः = हविष् शब्द का द्वितीया, एकवचन; वहति = √वह् लट् लकार प्र०पु० एक०; या = यत् शब्द का प्रथमा, एकवचन; होत्री = होत्री शब्द का प्रथमा, एकवचन; ये = यत् शब्द का प्रथमा, द्विवचन; द्वे = यत् शब्द का प्रथमा, द्विवचन; कालं = काल शब्द का द्वितीया, द्विवचन; विधत्तः = वि+√धा+क्त या = यत् शब्द का प्रथमा, एकवचन; श्रुतिविषयगुणा = श्रुतिविषयगुणा शब्द का प्रथमा, एकवचन; विश्वम् = विश्व शब्द का द्वितीया, एकवचन; स्थिता = √स्था+क्त व्याप्य = वि+आप्+ल्यप्; याम् = यत् शब्द का द्वितीया, एकवचन; सर्वबीजप्रकृतिः = सर्वबीजप्रकृति शब्द का प्रथमा एकवचन; इति आहुः = √ब्रुञ् लट् लकार प्र०पु० बहु०; यया प्राणिनः = प्राणिन् शब्द का प्रथमा बहुवचन; प्राणवन्तः = प्राणवान् शब्द का प्रथमा बहुवचन; ताभिः = तत् शब्द तृतीया बहुवचन; प्रत्यक्षाभिः = प्रत्यक्ष शब्द तृतीया बहुवचन; अष्टाभिः = अष्ट शब्द तृतीया बहुवचन; तनुभिः = तनु शब्द तृतीया बहुवचन; प्रपन्नः = प्रपन्न शब्द प्रथमा एकवचन; ईशः = ईश शब्द प्रथमा एकवचन; वः = युष्मद् शब्द द्वितीया बहुवचन; अवतु = √अव् लोट् लकार प्र०पु० एक०;

व्याख्या- यह श्लोक मंगलाचरण श्लोक है। कवि ने शिवजी के अष्ट देह की कल्पना करते हुए कहा है कि शिवजी अपने प्रत्यक्षमान आठ देहों से तुम्हारी रक्षा करें। तात्पर्य है कि जो (देह) विधाता की प्रथम कृति है अर्थात जल, जो (देह) विधिपूर्वक हवन किए गए पदार्थ वहन करती है अर्थात अग्नि, जो (देह) हवन करनेवाली है अर्थात होतृ, जो दो (देहें) समय का विधान करती हैं अर्थात सूर्य और चन्द्र, जो (देह)

श्रुतिगोचर गुणवाली होती हुई विश्व को व्याप्त कर विद्यमान है अर्थात आकाश, जिस (देह) को समस्त बीजों का मूल कारण मानते हैं अर्थात प्रकृति और जिससे जीव जीवधारी हैं अर्थात वायु, उन प्रत्यक्ष आठ देहों से युक्त शिव आपकी रक्षा करें। इस प्रकार शिवजी के आठ प्रत्यक्ष देह हैं- जल, अग्नि, होतृ, सूर्य, चन्द्र, आकाश, प्रकृति और वायु। कवि ने पाँच महाभूतों, यज्ञकर्त्ता, प्रकृति तथा सूर्य व चन्द्र को इंद्रियों से अगोचर शिवजी को प्रत्यक्ष रूप से इनमें प्रकटित माना है और शिवजी को इनके माध्यम से रक्षा करने की प्रार्थना की है।